भिवानी कैसेट क्रमांक संख्या	104
दिनांक	04. 03. 93
समय	प्रातः

शब्द-

गुरु ध्यान धरो तुम मन में। गुरु नाम सुमर छिन-छिन में।।
गुरु ही गुरु गाओ भाई। गुरु ही होय सहाई।।
जितने पद ऊंचे नीचे। गुरु बिन कोई नहीं पहुंचे।।
गुरु ही घट भेद लखाया। गुरु सुन्न शिखर चढ़ाया।।
महासुन्न भी गुरु दिखलाई। गुरु भंवर गुफा दरसाई।।
गुरु सत्तलोक पहुंचाया। गुरु अलख अगम दरसाया।।
गुरु ही सब भेद बखाना, गुरु से राधास्वामी जाना।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों! जितने भी सत्संगी प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

अब मैं सत्संग नहीं करूंगा, थोड़ी ऐसी ही बातें बताऊंगा। सत्संग आज दिन का है। पर मैंने कुछ बातें बतानी हैं। काफी भाइयों की मेरे पास शिकायतें गई हैं। उन्होंने विनती की थी कि हम दूर से आए हैं और नामदान नहीं मिला। मैंने कहा–मैं तो आपकी हाजरी बराबर बजाता रहा। मैंने तो अपने शरीर का ख्याल भी नहीं रखा। सत्संग भी आप लोगों को कल से मैंने तो तीन चार दे दिए थे और नामदान भी तीन दफा दिया था और आज भी उनकी विनती करने से महाराज की दया से शाम को नामदान मिलेगा। उदास न हों। हजूर का जो हुक्म है वह जरूर भी पूरा होगा। दिन का सत्संग एक बजे से दो घंटे का है। तीन बजे सत्संग समाप्त होगा। जाने वाले जा सकते हैं उस वक्त। अब तो सत्संग इतना ही है कि मैंने आपको सत्संग का टाइम बता दिया। जितने प्रेमी भाई, माता, बहनें आए हुए हैं, मैं तो इस वक्त उनके दर्शन करने के लिए ही आया था। मैंने मन में कहा–चलो! सब के दर्शन कर आऊंगा। उनके आगे विनती कर आऊंगा कि इस–इस तरह सत्संग का टाइम है। जिन भाइयों को सत्संग तक ठहरना है वे नामदान के टाइम तक शान्ति से ठहरें और कोई बात नहीं। प्रेम में तकलीफ तो महसूस ही नहीं होती। तुम रोज सुनते हो–

प्रेम के टेम नहीं दुनिया में।
प्रेम के नेम नहीं दुनिया में।।
प्रेम के जात नहीं दुनिया में।

प्रेम–प्रेम ही होता है। सो प्रेम के न नेम हैं न टेम हैं और न जाति है। पर मेरा कहना यही है कि जिन भाइयों ने जाना है, वे मिल लिए थे और वे मिलने की कोशिश न करें। क्योंकि भीड़ भड़ाका ज्यादा है। न ही प्रसाद बनवाने की कोशिश करे, लेकिन फिर भी वहां कोई भी आता है तो बना देता हूं। यहां प्रसाद का टाइम नहीं है। कई भाई यह भी सोचते होंगे कि महाराज जी बोले नहीं। हमारे से बातें नहीं की। मैं बहुतों से बोल तो लूं पर बातें करने का टाइम तो नहीं है। आप बताओ। फिर भी एक मौके पर बातें न भी कर सकूं तो ख्याल न करें कि क्या बात हुई कि महाराज जी ने बातें नहीं की। मैं दष्टि तो सभी पर आते ही डालता हूं कि प्रेमी आए हैं। आपका काम आप करते रहो। मेरा काम है उसे मैं करता रहूंगा। जिसको मिलने की इच्छा हो तो दिनोद आ जाना। वहां हर वक्त ही दरवाजा खुला रहता है। शांति रहती है। किसी वक्त भी आओ, बैठो बातें करो। अभ्यास की बातों का चिट्ठियों से पता कर लो। या खुद आ भी सकते हो। पर मेरा एक सिद्धान्त है। मैं अकेला बैठकर कोई भी बात नहीं बताता हूं। मैं कह देता हूं कि चलो। सत्संग में बोल दूंगा। सभी को उसका फायदा हो जाता है। मैंने कल सवेरे–सवेरे ही सत्संग किया था। उस सत्संग को याद रखोगे। उस कैसेट को याद रखोगे तुम्हारा भजन, सुमरण जरुर ही बनता रहेगा। जब कोई कमी महसूस हो तो जैसे बताया है वैसे ही

करते रहना।

मैं अपने तजुर्बो की बातें बताता हूं। मेरे पास ऐसे बहुत आदमी आए। उनको ऐसी बातें भी बताई और उनकी बिमारियों को भी दूर किया। सब से बड़ी मैंने बीमारी बताई थी कि सुरत द्वारा शब्द को न पकड़ना है। इससे बड़ी बीमारी कोई भी नहीं है। शब्द को कैसे पकड़ा जा सकता है? जब हमारे विचार ही घटिया हो तो। सो कहते हैं–

कबीर मन एक है, भौंव जगह लगा।
या हर की भक्ति कर, या विषय कमा।।
मन मेरा मसखरा, कहूं तो मानै रोस।
जिस मार्ग साहेब मिले, ताहिं न चाले कोस।।

जिस मार्ग से परमात्मा ने मिलना है इस मार्ग पर तो एक पग ही नहीं रखता है। इसीलिए इसका ख्याल रखना है। इसका ख्याल रखना होगा। ये बिना लगाम का घोड़ा है। जिधर हो जाता है उधर ही चल देता है। पर सतगुरु के हाथ में इसकी लगाम है। उनके पास नाम का अंकुश है। वह नाम धुनात्मक नाम है। उस धुनात्मक नाम से मन काबू में आ जाता है। स्वामी जी कहते हैं–

धुन सुन कर मन पतियायी।

धुनि को सुनकर मन काबू में आ जाता है और कोई भी काबू में आने का जरिया नहीं है। सो मैं आप लोगों को बता रहा था कि जो मिल लिए हैं वे फिर कोशिश न करें। हां, दिनोद आओ। पर अभी न आना। ये भी कह देता हूं आप लोगों को कि आज से मेरे पास एक हफ्ते तक आने की कोई भी कोशिश न करें और न कोई सत्संग ही रखवाने की कोशिश करे।

एक हफ्ता जिस तारीख को हो जाता है उसके बाद हम खडवाली का सत्संग ही रखेंगे जहां हमारा आश्रम बना हुआ है। मुझे कोई हिसाब लगा कर बता दो। हफ्ता भर के बाद कौन सा टाइम है। दिन है, तारीख है। ग्यारह या बारह तारीख है। सो बारह तारीख को वहां का सत्संग हो जाएगा। पहले खड़वाली का ही सत्संग है। बारह तारीख का है। खड़वाली का यह सत्संग आश्रम में होगा। सो ही मैंने आपको बता दिया कि इस एक हफ्ते में मेरे पास आने की कोई भी कोशिश न करें। क्योंकि मैं ज्यादा बात नहीं करूंगा तो आप भी ज्यादा उदास होकर आओगे। मेरे दिल में भी झटका लगेगा कि प्रेमी आए थे और मिल नहीं सका। मेरे सत्संगी ही कह देते हैं कि महाराज ! आराम करो। वे ऐसा भी कह देते हैं कि अभी नहीं मिलेंगे। जब मैं सुन लेता हूं तो कह भी देता हूं कि आने दो। क्या बात है? मेरा ऐसा ही स्वभाव है। क्योंकि मैं अपनी छोटी उम्र में महात्माओं के पास जाया करता था। बहुत घूमता था। मैंने कल बताया था। मैं सबकी बातें बता देता हूं। मैं सभी के पास गया हूं। पर मैंने अपना तन, मन, धन तो मेरे सतगुरु अरमान साहब को ही दिया था। उनसे बढ़कर मुझे कोई भी नहीं मिला। मैंने तो उन्हीं को अपना सब कुछ दिया था। उन्होंने कह दिया था कि मेरे से बढ़कर अगर कोई मिलता है तो उससे नाम ले लेना फिर मुझे उनसे बढ़कर कोई मिला ही नहीं। उनमें बड़ी भारी सिफ्त थी। उन्होंने अपने सारे जीवन में किसी का खण्डन नहीं किया। मंडन ही किया। वे नब्बे वर्ष की आयु तक कभी बिमार नहीं हुए। उन्होंने कमा कर खाया। हर आदमी से खुश होकर बोलते थे। प्रेम से रहते थे। उनकी सुरत छठे चक्कर से नीचे नहीं उतरी। कभी उतरी तब बातें की। सत्संग कर लेते थे। फिर उसी विचार में चले जाते थे। आप ये पूछोगे कि इसकी क्या निशानी है, मैं आपको निशानी बता देता हूं। उनकी वाणी को पढ़ो। वैसे तो सभी ग्रंथ ही बावन अक्षरों से बने हैं। पर उनकी वाणी में किसी दूसरे के शब्द एक भी नहीं है और न उन पर किसी की छाया है। सो ही मैं आपको बताता हूं कि उनके गुरु महाराज भी ऐसे ही थे। उनके सात हजार शब्द तो अब छपे हैं। उन्होंने कच्चे तौर पर लिख रखे थे। उनकी पांच हजार पुस्तकें भी महत्त्व रखती हैं। ये इतने बड़े काम थे उनके। वे कुल मालिक थे। कबीर पंथियों ने उनको कबीर का अवतार बताया है। एक कबीर पंथी का नाम

लिखा हुआ है। शायद खेमराज या ऐसा ही कोई नाम है। वह बहुत बड़ा कबीर पंथी था। उसने कहा–मैं बीमार हूं। मुझे जाना तो है पर मुझे महर्षि शिवव्रत लाल जी से मिला दो। उसने अपने शिष्यों से कहा। उसने ग्यारह कबीर साहब के बोध सागर भी बना कर छपवाए हैं। मैं नाम उसका भूला हुआ हूं। वह जब महाराज शिवव्रत लाल जी के पास आया तो उसने उनको छाती से लगा कर कहा कि वाह! शिवव्रत लाल! अब मैं बारह महीने और भी नहीं मरूंगा। मुझे शक्ति मिल गई है। आप तो खुद कबीर हो।

बीजक की टीका करी, धर के मनुष्य शरीर।
सतगुरु खुद आ गए, दाता आप कबीर।।

शिवव्रत लाल जी खुद ही कबीर का अवतार थे। वे कबीर के अंश थे। क्योंकि उन्होंने कबीर साहब की असंख्य वाणियों की टीकाएं कीं। इतनी न किसी ने की हैं और न ही कोई कर सकता है। लोग उनके अब तक भी अर्थ नहीं कर सकते हैं। इतने बड़े बने बैठे हैं काफी लोग। उनके शब्द मिल जाएंगे पर उनका कोई अर्थ नहीं कर सकता है। हां, मेरे पास एक पुस्तक है। उसने अर्थ किए हैं। वह कबीर पंथी हैं। बहुत अच्छा आदमी है। महान आत्मा है वह कोई पण्डित है। वह संस्कत का जानकार भी है। करणी वाला भी है। उसका नाम मुझे याद नहीं है। उसकी मेरे पास एक पुस्तक है। उसने शब्दों के अर्थ किये हैं। बड़े अच्छे किए हैं। वह पुस्तक काशी की छपी हुई है और काफी मिलती है। बहुत ही अच्छे अर्थ किए हैं। सो बिना विद्या के जो अर्थ करता है वह गिर जाता है। अर्थ तो अनुभव से ही किया जाता है।

अब ये दो वाणियां स्वामी जी महाराज की आई हैं। इनमें से कौन सी के बारे में क्या कहूं? मौका लगा तो दिन में इन पर सत्संग करूंगा। स्वामी जी की वाणियों का ही अर्थ करूंगा। ये दोनों ही वाणियां ऐसी थी जैसे कबीर साहब की दो वाणी हैं। उनमें एक तो है–

कर नैनों दीदार, महल में प्यारा है।

दूसरी वाणी है–

वह पिण्ड-अण्ड से न्यारा है।

ये दो वाणियां इतनी अच्छी हैं कि इनका अर्थ भी यदि किया जाए तो इनको पता लग जाए। इनका बाबा सावण सिंह ने बड़ा सुन्दर अर्थ किया है। वह अठारह मंजिलों का शब्द है। आखिर में स्वामी शब्द के साथ ही वाणी को पूरा किया है। उनका सारे ही ग्रंथों का एक निज ग्रंथ है। जैसे महाराज गरीबदास की "ब्रह्म वेदी" है। जैसे घीस साहब का शब्द है–

शब्द हमारा सत है, नहीं शब्द से न्यारा।
सोच समझ कर देख ले, भरमे मत प्यारा।।
मनवा निश्चय होएगा, दिल दरसे सारा।
फिर दरसा जोगी हुआ, सतगुरु का प्यारा।।
घीसा साहब गरीब ने एक शब्द विचारा।

घीसा साहब की वाणी बड़ी अच्छी है। मुझे कल ही एक घीसा पंथी मिल गया। उससे मैंने पूछा। उसने नाम बताया और मैं हैरान हो गया कि वह सत चित जीत दयाल शायद इस तरह कह कर फिर पिता–माता तू ही, ऐसी महारनी सी रटने लग गया। मैंने कहा–घीसा साहब का दिया यह नाम तो नहीं है। घीसा साहब के शिष्य नेकी राम थे। घीसा साहब बहुत अच्छे संत हुए हैं। उनका उपदेश तो 'सतनाम' का ही था। उनकी बातें भी राधास्वामी धाम की ही थी। वे बहुत ऊंचे थे। उन्होंने भी अपने जीवन में तानी तनी। उनके पिता जी तानी का काम किया करते थे। मैं बातें कह रहा था कि आप लोगों ने जिन्होंने मिलना जुलना है जो मिल नहीं है वे जरूर ही आएं। दर्शन करने वाले आओ और ठहरने वाले ठहरो। पर मैं दो तीन बजे आपको छुट्टी दे दूंगा। सतगुरु की दया हुई तो शाम को भी सत्संग होगा। अब आप स्वामी जी महाराज के बारे में पूछोगे। उनके बारे में क्या बताऊं? मुझे तो पता नहीं था। एक महात्मा ने मेरे से कहा कि स्वामी जी महाराज की वाणी तो एक महा पवित्र ग्रंथ है। कबीर साहब का बीजक कबीर साहब के चौदह योग। कबीर साहब की वाणी भी बेहद पवित्र है। पर उसमें तीन अंग हैं।

भयानक, रोचक और यथार्थ। ये सब न्यारी–न्यारी हैं। गरीबदास जी के ग्रंथ में भी तीनों का अंग हैं। यही भयानक, यथार्थ और रोचक। सभी संतों की वाणियों में तीनों ही अंग आते हैं। पर स्वामी जी महाराज का ग्रंथ तो महा पवित्र हैं उसमें न तो भयानक बातें हैं और न उसमें रोचक बातें हैं। उसमें तो ज्यों की त्यों यथार्थ बातें हैं। इसीलिए इसको महापवित्र ग्रंथ कहते हैं। यही इन दोनों पर लागू होती हैं एक शब्द में कहा है–

गुरु की कर हर दम पूजा।

आप लोग किस गुरु को मानते हो? आप मानते तो शब्द गुरु को ही। शब्द गुरु नीचे उतर कर आया था और वही राधास्वामी धाम में चला गया। वह मूल मंत्र बता रहा था। दूसरे में भी यही कहा है–

गुरु ध्यान धरो तुम मन में,
गुरु नाम सुमर छिन-छिन में।

गुरु का किस प्रकार ध्यान करना है? जो सतगुरु करनी वाला है, शब्द भेदी है। शब्द का अभ्यासी है, तो तुम्हारे शब्द के अभ्यास के समय वह शब्द स्वरूपी सतगुरु तुम्हारे आ जाएगा। इसी से तुम्हें पता लग जाएगा, क्योंकि शब्द की कमाई करने वाले की फिल्म आ जाती है। वह कैसे? आप ने सुना है कि सतगुरु की रेडीशन काम करती है। सतगुरु का हृदय तो एक टेलीविजन का केन्द्र है। मैं साईंस की बातें बताता हूं। शिष्य का हृदय टेलीविजन है। यह आपको पता रहे कि जो सतगुरु के गुण हैं वे गुण शिष्य में अवश्य ही आ जाते हैं? जैसे टेलीविजन के केन्द्र पर जो कुछ होता है वह सब टेलीविजन पर देखते हो। चाहे वहां कोई गाना गाता हो या कोई नंगा नाच करता हो या कपड़े पहन कर नाच करता हो या कोई वहां भाषण दे, वह हमारे टेलीविजन में आ जाता है। इसी प्रकार से सतगुरु का हृदय टेलीविजन का केन्द्र है और शिष्यों के हृदय टेलीविजन हैं। जो सतगुरु के हृदय में बातें होगी वे शिष्य के हृदय में आ जाएंगी। सो–

सतगुरु भी पूरा और चेला भी पूरा।
दोनों भाग से मेल मिलाई।

पर यह भी तो सुना होगा–

गुरु लोभी, शिष्य लालची, दोनों खेलै दाव।
अध बीच में डूबसी, चढ़ पाथर की नाव।।

वे बीच में ही डूब जाते हैं। जैसे पत्थर का नाव में बैठने वालों का डूबना निश्चित होता है। वह बच ही नहीं सकता है। उसको ही कबीर साहब कहते हैं–

गुरु ऐसा चाहिए, शिष्य का कछु नहीं लेय।
शिष्य को ऐसा चाहिए, सर्वस सतगुरु को देय।।

सतगुरु को सर्वस्व देने का क्या अर्थ है? शिष्य अपने आप के भाव को खो देता है। पर यह आपा भाव कब खोता है? यह आपाभाव तो जब अभ्यास करता है तभी समाप्त होता है। सतगुरु की वाणी को लेकर उसके कहने के अनुसार जब वह उन मंजिलों का वाकिफकार हो जाता है उसका आपा भाव खो जाता है। वह अपने विचारों को छोड़ता है और उसमें गुरु के विचार भर जाते हैं। तब वह अपने नाम और रूप रंग तक को भी खो देता है। वह सतगुरु के रंग में रंग जाता है। ऐसा नहीं होता है कि सतगुरु काना हो तो शिष्य भी अपनी एक आंख को फोड़ ले। ऐसा भी नहीं है कि सतगुरु लंगड़ा है तो शिष्य भी लंगड़ा कर चलना शुरू कर दे। ऐसा भी नहीं है कि सतगुरु दाढ़ी वाला है तो शिष्य भी दाढ़ी रखवा ले। इस तरह की नकल तो मेरी कइयों ने की। सारे ही गिर गए। सतगुरु की नकल करने हो तो उसकी करणी की नकल करो। तिर जाओगे। अगर दाढ़ी, मूछों की, कपड़ों की या ऐसी ही और नकल की तो गिर जाओगे। सतगुरु की नकल नहीं, सतगुरु की असली बातों पर अमल करो। तब उसकी रेडीशन तुम्हारे अंदर आ जाएगी। साईंस का ये तजुर्बा है। जो सतगुरु कामी है तो उसके चेले कभी भी नहीं सुधर सकते हैं। वे कामी ही बनेंगे। जो सतगुरु क्रोधी है तो शिष्य भी क्रोधी और चुगलखोर है तो चुगल ही बनेंगे। जो बातून है और अभ्यास नहीं है तो वे भी अभ्यासहीन बातून बन

जाएंगे। सो सतगुरु की रेडीशन काम करती है। सतगुरु केन्द्र की गति टेलीविजन पर आती है इसी प्रकार सतगुरु के हृदय की बातें भी शिष्य के हृदय में प्रवेश कर जाती हैं। यह संतों का मार्ग है। सो सतगुरु और शिष्य का हृदय एक होता है। तो मैंने आपको थोड़ी बातें बताई। शब्द में यही आया है–

गुरु ध्यान धरो तुम मन में,
गुरु नाम सुर छिन-छिन में।

गुरु का ध्यान और नाम क्या है? गुरु नाम सुमर छिन–छिन में का अर्थ तो यही है कि जब तुम्हारी शब्द की धुन छुट जाती है तो उसका बार–बार ध्यान करो। जब तुम्हारा ध्यान हट जाता है तो बार–बार ध्यान करो। कोशिश करते ही रहो। तो तुम्हारा ध्यान एकदम बन जाएगा। अपने प्यारे का ध्यान तो कुदरती ही बन जाता है। मैंने कल शाम को भी आपको काफी बातें बताई थीं। रात को बड़ी भारी शांति रही और सभी ने मेरी इज्जत का ख्याल किया। अब भी मेरी यही विनती है कि रहने वाले सभी फूल की तरह से और प्यार प्रेम से रहें। मधुमक्खी बन कर रहा करो, वह फूल पर बैठती है उस फूल का रस ले लेती है और उस पर अपने पैरों के निशान भी नहीं बनने देती। बिष्टे को मक्खी शहद पर बैठ जाती है तो खुद भी मर जाती है और दूसरे के खाने लायक भी नहीं छोड़ती। सो बिष्टे की मक्खी मत बनो। मधुमक्खी बनो, गुणग्रही बनो। अवगुणग्रही मत बनो तो दूसरों के अवगुण तुम्हारे अन्दर आ जाएंगे। दूसरों के अवगुण आ जाएंगे तो तुम भी गंदे हो जाओगे। मेरे दाता एक मिसाल दिया करते कहते थे–बेटा! कभी भी किसी की निंदा न करना। निंदा करने वाला गंदा हो जाता है। वह दूसरे के पाप अपने अंदर ले लेता है। तुम अपने अच्छे विचार रखो। जिसके पास भी जाते हो, प्यार और प्रेम से मिलो; बातें करो। एक दिन मैं एक जगह सत्संग करने गया था। उन्होंने कहा कि हमारे पास कोई दूसरे प्रेमी आए थे। हमने उनका बड़ा अच्छा बन्दोबस्त किया। गांव कौन सा था, वह तो याद नहीं है। अभी हम पिछले दिनों गए थे। वहां बैठे थे तो एक सत्संगी के पास गांव वाले ही आए हुवे थे। उसने कहा–हम आश्रम की कोशिश कर रहे हैं। मैंने कहा–बड़ी अच्छी बात है। उसने कहा–हमारे गांव में कोई सत्संगी आए हुए थे। उनकी हमने बड़ी भारी खातिरदारी की। इतनी सेवा की कि बड़ी भारी। पर सुबह ही वे कहने लगे, 'सुनो!' हमने सोचा कि ये कोई बहुत ही अच्छी बात बताएंगे। उसने कहा राधास्वामी वालों के पास कभी भी मत जाना। मैंने कहा ये तेरे ही सत्संगी हैं क्या? क्या राधास्वामी वालों का कोई एक भी सत्संगी नहीं है यहां पर? वह चुप हो गया। एक ने कहा–हमें यह पता लग गया कि तुम घटिया आदमी हो हमारे महाराज ने तो कभी भी यह नहीं कहा कि दूसरे आने वाले की सेवा मत करो। तो यही कहते हैं कि सेवा सबकी करनी चाहिए। जो भी महात्मा आता है सभी की सेवा करो।

कबीर साहब ने कबीर योग के दूसरे भाग में लिखा है कि अंगहीन सतगुरु कभी भी मत करना। न वह आप तिरता है और न औरों को तारता है। अगर कोई मिसाल हो तो बताओ। अंगहीन गुरु बन सकता है। सतगुरु कभी भी नहीं। एक बात और बता देता हूं। लड़की गुरु बन सकती है, सतगुरु नहीं बन सकती है। दूसरी बात संत के घर में संत नहीं आ सकता। संत रास्ता न्यारा है और सन्तान रास्ता न्यारा है। काफी ऐसी मिशालें हैं। कल भी मैंने दी होंगी। मेरी बातों को काटने वाला हो तो मेरे पास बेधड़क होकर आ जाना। पर अपने ग्रंथों का ख्याल करके पढ़कर आना और अगर उन ग्रंथों में ही वे बातें मिल गई तो उन्हें नीचा देखना पड़ेगा। जैसे महाराज सावण सिंह ने लिखा है कि राधास्वामी नाम एक धुनात्मक नाम है और उन्हीं के काफी अनुयायी वर्णात्मक कह देते हैं। वे सावण सिंह के शिष्य नहीं है। वे तो और ही किसी के शिष्य हैं। सावण सिंह का लेख है। वे कहते हैं कि राधास्वामी नाम धुनात्मक है। जो राधास्वामी नाम को वर्णात्मक कहता है, उसको पूरा सतगुरु नहीं मिला। उसका

सतगुरु ही अधूरा है। ये धुनात्मक नाम है। सो उन्होंने अपने ग्रंथ ही नहीं देखे हैं। जो मैंने बातें कही हैं इन बातों पर आक्षेप करना चाहते हैं या पूछना चाहते हैं तो पहले अपने ग्रंथों को देख कर आना। मैं उनके ग्रंथों का हवाला देकर बताता हूं। हमारा सबसे बड़ा ग्रन्थ तो कबीर साहब ही है। मैं कबीर साहब का या नानक साहब का हवाला देता हूं।

दादू जी का, पलटू जी का, रैदास जी का, संतों के हवाले देकर बातें करता हूं। कई प्रेमी मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि हम इनकी बातों को मानते नहीं हैं। वे कहते हैं कि हम कबीर साहब को नहीं मानते हैं। मैं पूछता हूं कि आप किसको मानते हो? वे कहते हैं कि हम वेदों को मानते हैं। मैं पूछता हूं कि हम अगर कह दें कि हम वेदों को नहीं मानते तो आप क्या करोगे? क्या आप कोई मुकदमा करोगे? वे कहते हैं कि नहीं! मैं कहता हूं कि फिर तेरी मर्जी है। तू कल यह भी कह सकता है कि तू अपने मां–बाप को भी नहीं मानता है तो हम क्या करेंगे? हम तो क्या कबीर साहब को तो दुनियां मानती है। पर आप यह भी बताओ कि क्या आप कबीर साहब की वाणी नहीं पढ़ते हो? वे कहते हैं कि पढ़ते हैं। मैं कहता हूं कि जब तुम उनको (कबीर साहब) मानते ही नहीं तो फिर उनकी वाणी पढ़कर उससे कोई भीख मांगते हो? तुम्हारे वेदों की वाणी ही पढ़ लिया करो। वही काफी है। कबीर साहब तो पूर्ण पुरुष, पूरण धनी थे कि उनकी बातें तो सभी को ही माननी पड़ती हैं। मैंने जितने भी सत्संग किए, सभी कबीर साहब पर ही किए हैं और कबीर साहब की साखी लेकर आपको बताया है। कल कबीर साहब की साख से ही ये बातें बताऊंगा जो मैं अब कह गया हूं। पर कोई भी भाई अपनी ही पुस्तकों को टटोल करके बातें करे। मैं छोटी उम्र से ही साधुओं में बहुत घूमा हूं। उन संत महात्माओं की दया से मेरे दिमाग में ये बातें आ जाती हैं, ये सब पुरानी सुनी हुई थीं। अब भी जब इनको सुनता हूं तो निशान करवा देता हूं। मैंने थोड़ी बातें कही–

गुरु ध्यान धरो तुम मन में, गुरु नाम सुमर छिन-छिन में।
गुरु ही गुरु गाओ भाई, गुरु ही फिर होएं सहाई।

फिर ध्यान सुमरन में बढ़ते–बढ़ते आगे चलो, तुम्हारा मददगार तुम्हें मिल जाता है। वही तुम्हारी रक्षा करता है वह शब्द। जब वह शब्द नीचे से चलकर राधास्वामी धाम तक, उस मूल मंत्र में समा जाता है। जब वह उस मूल मन्त्र से निकलता है तो फिर उसी के अंकुर फूटते–फूटते वही शब्द मन के घाट पर आ जाता है। जब वह मन के घाट पर आ जाता है तो हम कर्मकांडी बन जाते है और कर्मों में फंस जाते हैं। फिर वह सुरत जीवात्मा अपनी कहानी शुरू कर देती है। जैसे कहा है–

पहले ये मन काग था, करता जीवन घात।
अब ये मन हंसा हुआ, चुग-चुग मोती खात।।

इसी सुरत की ऊपर से नीचे आते ही काग वत्ति बन जाती है। यह विषय विकारों में फंस जाती है। वही सुरत जब उलट कर चलती है तो राधास्वामी धाम में जाकर वहां की वासी बन जाती है। जहां से आई थी वहां समा जाती है। समझने वाले समझ जाएंगे। जिन्हें दीक्षा मिली हुई है वह राधास्वामी धाम हमारा मूलमंत्र, मूलधाम है। वही निज धाम है, वहीं से हमारी सुरत आई थी और उसी में वापिस जाना है। इसीलिए संतों ने अठारह मंजिलों का वर्णन करके बताया है। अगर कोई वेदान्ती कहे कि हमने तो ये स्थान नहीं सुने तो मैं कहता हूं कि तुम अपने ग्रंथों के चोर हो। तुम्हारी गरूड़ पुराण में भी अठारह मंजिल लिखी हुई हैं। वेद शास्त्रों को भी तुम भूल बैठे हो। गरूड़ जी महाराज तो बहुत ऊंचे महात्मा हुए हैं। कौन कह सकता है कि वे पाखण्डी थे? उनकी गरूड़ पुराण में 16 वां या 17 वां आखिरी अध्याय देखो। उसमें सारा ही संतमत का वर्णन कर रखा है। मैंने तो कई वर्ष हुए उस वक्त किसी से सुना था। सो मुझे वे बातें याद आ जाती है। उन्होंने वह वर्णन किया है कि जहां–जहां से भी उनकी सुरत गई है और जो कुछ भी उनकी सुरत जिस स्थान पर कुछ देखती चली है।

उसी का उन्होंने वर्णन किया है। जैसे–जैसे कर्म किए वह उनको देखती चली है। यही बात स्वामी जी महाराज ने बताई है कि जैसे–जैसे सुरत कर्म करती है, वैसे ही कर्म देखती हुई यह अपने धाम को चली जाती है।

यह करणी का भेद है, नहीं बुद्धि विचार।
बुद्धि छोड़ करणी करो, तब पावो कुछ सार।।

अर्थात बुद्धि को छोड़ कर करणी करो। यह करणी का मार्ग है। बातों का मार्ग नहीं है। सो मेरे बस की बात नहीं है। मैंने तो यही सोचा था कि दो बातें कहकर चुपचाप आ जाऊंगा। फिर भी मेरी बुद्धि में ये बातें आईं कि दिन का सत्संग है। आप शांति से सत्संग सुनकर जाना। मैं तीन तरह का सत्संग बताऊंगा। इसमें स्वार्थ परमार्थ और परोपकार का वर्णन करूंगा। स्वार्थ से आप क्या मतलब लेते हो? अगर तुम स्वार्थी नहीं बनोगे तो मर जाओगे। स्वार्थ के साथ तो परोपकार भी करना पड़ता है। जब परोपकार करोगे तो परमार्थ भी बन जाएगा। जो परमार्थ को समझते नहीं हैं। कहते हैं कि धर्मशाला बना दी है। बस परमार्थ बन गया। मंदिर बना दिया, कह दिया परमार्थ कर दिया। सदाव्रत लगा दिया कह दिया परमार्थ किया है। नहीं ये परमार्थ नहीं है। परमार्थ को समझोगे तब पता चलेगा कि परमार्थ किसे कहते हैं। कई लोग जिसे स्वार्थ कहते हैं, जिससे काम चलता है। इसके बिना काम ही नहीं चलता है। सो मैं इन तीनों बातों को समझा कर, ये लोग कई कह देते हैं कि हम सनातनी हैं। हम आर्य समाजी हैं। हम संतमत के हैं। संतमत तो एक ही मार्ग बताता है। वह है सुरत–शब्द का योग। सनातन भी यही कहता है कि जो चीज परंपरा से बनी है, उसको बंदगी करो। वह तो शब्द ही है और आर्य भी यही कहते हैं कि तुम श्रेष्ठ बनो। जब श्रेष्ठ बन गए तो सनातनी बन कर संतमत में आ गए। कौन कहता है कि ये बातें न्यारी है? पेट के पुजारियों ने ये झगड़े कर लिए है। जो गुरुओं की ठेकेदारी लिए हुवे थे। उन्हीं को पूरे सतगुरु नहीं मिले। वे रूढ़ीवादी हैं। सतगुरु ने तो कमा कर खाना बताया है। कमाकर खाने वाला किसी का विरोध नहीं करेगा। उसे कोई रोटियों का तो फिक्र हैं नहीं वह तो कमाता है और खाता है। मजे से रहता है। मुफ्त में उपदेश देकर चला जाता है। संत महात्मा आप कहोगे कि क्या आप पूजा नहीं लेते हो? मैं तो खूब लेता हूं। मेरी जेबें रुपयों से भरी हैं। पर मुझे सतगुरु नहीं मिलता तो मैं भी गिर जाता।

सत्संगियों ! सत्संगी की एक तिलभर चीज खानी भी हराम है। यह मेरे लिए गंदी चीज है। मैं सवेरे–सवेरे बात बताता हूं। मेरे सतगुरु पूर्ण पुरुष थे। उन्होंने कहा कि बेटा! कमाकर खाना। मैं तो आप लोगों की हाजरी बजाता हूं। उनके कहने के अनुसार तुम्हारी मोगरी मैं तुम्हारे मार देता हूं। कोई रेशम के कपड़े में लपेट कर मार देता है और कोई खुली मारता है। जो खुली मारता है उसमें दर्द होता है। बस इतनी ही बात है। मैं सत्संग भी रेशम के कपड़े में लपेट कर करता हूं। समझदारों के लिए वह सत्संग करता हूं कि उन्हें हौसला हो जाए और काल चक्र से बाहर निकल जाए। नहीं तो मारे जाएंगे। बार–बार मौका नहीं मिलेगा। बड़ा कीमती टाइम है। यह नारायणी देह मिली हुई है। इसको अगर चूक गए तो फिर चूक ही गए। कबीर साहब या तुलसीदास जी कहते हैं–

अब के चूके पीछे नहीं ठिकाना।
दिन पर दिन चोला होय पुराना।।
तू करले बंदे भजन हरी का।
फिर के बनैगा इस खोड़ मरी का।।

नितानन्द भी यही कहते हैं–

आज का लाहवा लीजिए कल किसको होई।
यह तन पार्टी में मिल जाएगा, जानत है सब कोई।।
लक्खी, किरोड़ी चले गए, बहु जोड़ खजाना।
से तन चंदन लेपते, चले गए शमशाना।।
कुंभकर्ण से वीर थे, रावण लंका धारी।
नाम बिना वंश डूबिया समझावत है नारी।।

नाम के बिना बड़े–बड़े वंश डूब गए। जिसने नाम की कमाई की वे तिर गए। सो नाम का सहारा लो।

वह नाम वर्णात्मक नहीं धुनात्मक है। तुम्हारे अन्दर धुनकारें देता रहता है। हर वक्त वह झिंगुर गाजता रहता है। आवाजें आती रहती हैं। नानक साहब या किसी और की वाणी है, वे कहते हैं–

अच्छे खासे महल में देवे बांग खुदा।
सूता बांग न सुणिए, रहा खुदा जगा।।

सूते पड़े बेचारे तो चौरासी में चले जाते हैं। खुदा तो खुद ही जगाता रहता है कि जाग भाई! टाइम जा रहा है। जागो भाई जागो। सों खड़े होने वाले खड़े हो जाते हैं।

मेरी छोटी उम्र थी। मैं कहीं गया था। एक मिसाल मैंने सुनी थी। वह मिसाल अब मुझे याद आ गई। आप को सुनाता हूं। कहीं कोई बहुत बड़ा सेठ था। उसके पास एक गूजरी दूध लेकर आई। जब वह कुछ देर दरवाजे पर खड़ी रही और दूध लेने वाले ने देर कर दी। वह बोली–बाबू! जल्दी करो। सोचो वह क्या कहती है? सो कहते हैं–ज्ञान और धाम का तो चमका ही लगता है। वह सेठ हाथ में सोटी लिए हुवे अन्दर से आया तो उसने उसको फिर यही कहते सुना कि बाबू जल्दी करो। मुझे बहुत दूर जाना है। पैसे दे दो जल्दी, टाइम थोड़ा है। शाम का टाइम था। उसने तो कई बार यही कहा कि बाबू टाइम थोड़ा है। जल्दी करो। जाना दूर है। जब बार–बार उसने ये बातें कहीं तो सेठ ने कहा–क्या बात है? उसने फिर वही बात दोहराई कि बाबू जल्दी करो, टाइम थोड़ा है, जाना दूर है। उसको तो वहीं झटका लग गया। उसने तो यही आवाज पकड़ ली कि टाइम थोड़ा है, जाना दूर है, जल्दी करो। वह अपनी सोटी लेकर उसी दशा में ही घर से निकल गया। इस धुनी में घूमता–घूमता वंदावन जा पहुंचा। इन लोगों के ये तीर्थ वंदावन और हरिद्वार ही बड़े तीर्थ हैं। छः महीने में उसके लड़कों ने उसको ढूंढा। वह मिल गया। उन्होंने कहा–चलो पिता जी। उसने उनको भी कह दिया कि भाई! टाइम थोड़ा है, जाना दूर है, टाइम थोड़ा है और जाना दूर है। जल्दी करो। अब यही मैं आपको कहता हूं। मेरे प्रेमियों, माताओ और बहनों! टाइम तो थोड़ा है और जाना दूर है। जल्दी करो। सतगुरु का शरणा लेकर और अभ्यास करके चले जाओ। सतगुरु तुम्हारे अंदर बैठा हुआ है। कबीर साहब भी कहते हैं–

जीवन तो थोड़ा भला जो हरी सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरे ना कोय।।

जीना तो थोड़ा ही अच्छा है। अगर परमात्मा की भक्ति कर ले तो। लाखों वर्ष का जीवन किस काम का? गरीबदास जी कहते हैं–

गिद्धों में और सिद्धों में कोई भी फर्क नहीं है।

गिद्ध भी आसमान में उड़ते हैं तो सिद्ध भी आसमान में उड़ते हैं। क्या फर्क है? इसीलिए जीना तो थोड़ा ही अच्छा है। यदि उस मालिक की; सतगुरु की भक्ति कर लेता है। सो भाई प्रेमियों, सत्संगियो ! मैंने ये थोड़ी सी बातें चल पड़ी तो बता दी। रूक नहीं सका क्या करूं?

।। राधास्वामी ।।